२५ - सर्वोतम आने वाला है!

1

स्वर्ग वास्तविक है

2

एक छोटी लड़की की कहानी बतायी जाती है, जो अपने जीवन भर शहर में रहती रही। शहर के चकाचौंध प्रकाश के कारण उसने कभी तारे नहीं देखे थे। एकबार गर्मियों में उसकी माँ उसे छुटटी पर गाँव ले गई।

3

संध्या के समय सूर्यास्त के बाद आकाश में सितारे हीरों के समान जगमगाने लगे। छोटी लड़की ने आश्चर्य से ऊपर देखा। वह तारों जड़े आसमान की सुन्दरता को देखकर अति प्रसन्न हुई। उसने कहा, "ओह माँ, यदि स्वर्ग बाहर से इतना सुन्दर है तो अन्दर से कितना सुन्दर होगा।

4

(दृश्य)

स्वर्ग के विषय ने संसार भर के स्त्री पुरुषों का सदियों से ध्यान आकर्षित किया है। स्वर्ग वास्तव में कैसा है?

क्या यह वास्तव में कहीं है भी?

यदि हाँ तो कहाँ है और कैसा है?

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

5

कुछ लोग स्वर्ग में विश्वास नहीं करते कुछ लोग कहते हैं कि तीन या सात स्वर्ग हैं।

कुछ कहते हैं कि मरने पर इंसान स्वर्ग को जाता है।

6

कुछ लोग कहते हैं - नहीं पहले इंसान पाप मोचन स्थान में जाता है और उसके बाद शायद स्वर्ग में।

7

कुछ कहते हैं स्वर्ग कोई वास्तविक स्थान नहीं किन्तु केवल एक मानसिक दशा है।

8

कुछ ऐसे भी हैं जो विश्वास करते हैं कि अन्त में सब लोग स्वर्ग में जाएंगे। कुछ कहते हैं कि केवल थोड़े से लोग ही वहाँ पहुँच सकते हैं। कितनी अधिक गड़बड़ी है। कितने मतभेद है!

9

(दृश्य)

स्वर्ग के विषय में इतने अलग अलग विचार क्यों हैं? जबकि बाइबिल इसे एकदम स्पष्ट करती है तो इतने अलग अलग विचार और सिद्धान्त क्यों हैं?

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

10

क्या आप जानते हैं कि वास्तव में बाइबिल स्वर्ग के विवरणों से भरी पड़ी है? परमेश्वर चाहता है कि हम स्वर्ग के विषय में जानें ताकि वहाँ होने के लिए दृढ़ फैंसला करें! स्वर्ग कोई गुप्त स्थान नहीं है जिसे परमेश्वर ने हमसे छुपा रखा हो।

11

बहुत -□सी बड़ी इमारतों में एक ऐसी चाबी होती है जो प्रत्येक ताले और प्रत्येक दरवाजे में लग सकती है।

12

इमारत के मालिक के पास वह चाबी होती है जिसे मास्टर चाबी कहा जाता है। उस एक ही चाबी से सब दरवाजे खुलते हैं।

13

परमेश्वर के पास एक मास्टर चाबी है जिससे स्वर्ग के सभी रहस्य खुलते हैं और वह मास्टर चाबी है बाइबिल हमारी जानकारी का एक मात्र विश्वास योग्य जानकारी स्रोत। सौभाग्य से हमें मानवीय सिद्धान्तों और विचारों पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। हमे स्वर्ग के वास्तविक सत्य के विषय में किसी भ्रम में रहने की आवश्यकता नहीं है।

14

प्रेरित पतरस ने जानकारी के इस स्रोत के बारे में लिखा।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

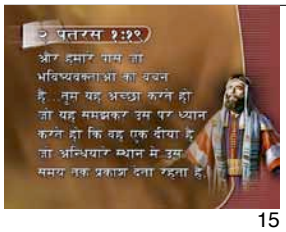

15

(मूलपाठः २ पतरस १:१९)

"और हमारे पास जो भविष्यवक्ताओं का वचन है। तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो कि वह एक दीया है जो अन्धियारे स्थान मे उस समय तकं प्रकाश देता रहता है,

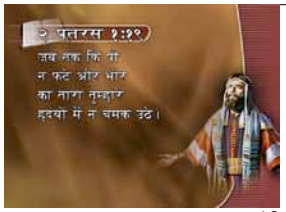

16

जब तक कि पौ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे।"

२ पतरस १:१९

17

परमेश्वर ने अपने वचन में यह भेद खोल दिया है कि

स्वर्ग कहाँ होगा

स्वर्ग कैसा होगा

इसकी राजधानी कहाँ होगी

वहाँ लोग क्या करेंगे

वहाँ किस प्रकार के लोग होंगे

उद्धार पाए हुए लोग कहाँ रहेंगे

इसकी राजधानी कैसी होगी

18

अब आइये परमेश्वर की मास्टर चाबी बाइबिल को लेकर उस वास्तविक भविष्य को खोजें जो परमेश्वर ने अपने अनुयायियों के लिए तैयार किया है।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

19

बाइबिल की अन्तिम पुस्तक प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर ने स्वयं ही यूहन्ना के समक्ष भविष्य की तस्वीर प्रकट की है। यूहन्ना ने जो देखा उसका वर्णन किया है:

20

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २१:१,२)
"फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी।

21

और समुद्र भी न रहा।

22

फिर मैंने पवित्र नगर नये यरुशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा,

23

और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो।"
प्रकाशितवाक्य २१:१,२

24

कुछ दृश्य विवाह दिवस के लिए तैयार दुल्हिन जैसी सुन्दरता और प्रसन्नता प्रस्तुत करते हैं!

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

25

केवल यूहन्ना ने ही यह स्वर्गीय निवास नहीं देखा। परमेश्वर के सभी भविष्यवताओं ने इसके बारे में युगों से जाना है। सुनिए:

26

(मूलपाठ: प्रेरितों के काम ३:२०,२१)
"और वह उस मसीह यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिए पहिले ही से ठहराया गया है,

27

आवश्यक है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे जब तक कि वह सब लोगों का सुधार न कर ले,

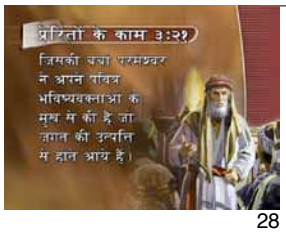

28

जिसकी चर्चा परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं के मुख से की है जो जगत की उत्पत्ति से होते आये हैं।"
प्रेरितों के काम ३:२०,२१

29

परमेश्वर किसकी पुनः स्थापना करने वाला है?
परमेश्वर प्रत्येक उस वस्तु की पुनः स्थापना करने वाला है जो आदम और हव्वा ने खो दी थी!
जब पृथ्वी अपने सृष्टिकर्ता के हाथों से निकली तब वैभव पूर्ण, त्रुटिरहित, और वर्णन से अधिक सुन्दर थी।

30

आदम और हव्वा के घर, अदन की वाटिका को सृष्टिकर्त्ता ने स्वयं ही बनाया और सजाया था।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

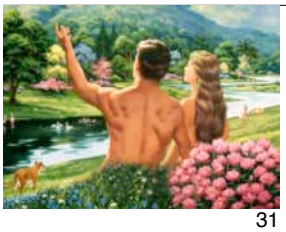
31

उन्हें पूरी तरह स्वास्थ्य, प्रेम, आनन्द, और परमेश्वर के साथ आमने-सामने की संगति प्राप्त थी। सब कुछ शान्ति और अनुरुपता में था। यदि वे परमेश्वर के निर्देशों का पालन करते, तो न तो वे कभी बीमार होते और न ही मरते।

32

और उसके निर्देश थे "अदन की वाटिका के वर्जित वृक्ष के फल को मत खाना, नहीं तो तुम मर जाओगे।"

33

किन्तु उन्होंने उसी पेड़ में से खाया। एक प्रेमी और दयालु परमेश्वर की सुनने की अपेक्षा उन्होंने एक निर्दयी, धोखेबाज, और विद्रोही स्वर्गदूत शैतान की सुनी।

34

इसके बाद उन्होंने अपने जीवन में पहली बार दोष, लज्जा, और भय का अनुभव किया। पृथ्वी के इतिहास में यह सबसे अधिक शोकपूर्ण दिन था। अपने आज्ञा उल्लंघन द्वारा उन्होंने अपना वाटिका का घर, पृथ्वी पर अधिकार, और जीवन के पेड़ तक की पहुँच -- सब कुछ खो दिया। जीवन के पेड़ का फल न खा पाने के कारण उनकी मृत्य निश्चित थी।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

35

अब उनके पास अनन्त जीवन नहीं था। उनकी प्रसन्नता, प्रेम, और सृष्टिकर्ता के साथ संगति समाप्त हो गई थी। हमारा सिद्ध संसार पाप के शाप से रोगी हो गया। पृथ्वी दु:ख, पीड़ा, बीमारी और मृत्यु का घर बन गई। अब स्वामी नहीं, आदम और हव्वा दास बन चुके थे।

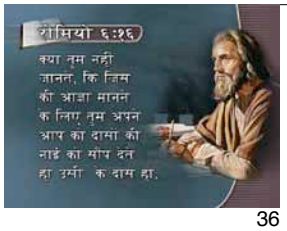

36

(मूलपाठः रोमियो ६:१६)
पौलुस कहता है कि "क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आप को दासों की नाई को सौंप देते हो उसी के दास हो,

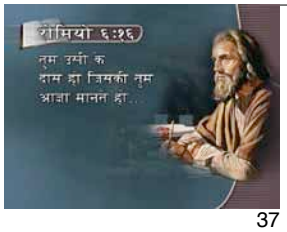

37

तुम उसी के दास हो जिसकी तुम आज्ञा मानते हो?"
रोमियो ६:१६
लेकिन एक प्रेमी और दयालु परमेश्वर समझता था। सर्प ने आदम और हव्वा को धोखा दिया था। परमेश्वर उनसे इतना अधिक प्रेम रखता था कि वह अपने गलती करने वाले बच्चों को आशा रहित नहीं छोड़ सकता था।

38

वाटिका के द्वार पर परमेश्वर ने आदम और हव्वा से प्रतिज्ञा की कि एक दिन उसका पुत्र, "स्त्री का वंश" आएगा और उनके लिए मरेगा ताकि वे परमेश्वर के परिवार से जुड़ सकें और अनन्त जीवन पा सकें।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

39

(मूलपाठः उत्पत्ति ३:१५)

"और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच और तेरे और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा;

40

वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को डसेगा।"

उत्पत्ति ३:१५

41

जैसे पीढ़ियां गुजरीं और पृथ्वी पर लोगों की संख्या बढ़ी, वैसे पाप भी बढ़ता गया। मानव जाति ने परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञा को लगभग पूरी तरह भुला दिया।

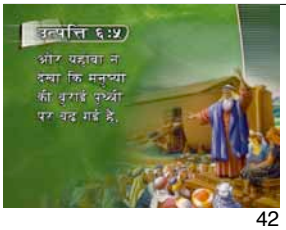

42

(मूलपाठः उत्पत्ति ६:५)

लोग दुष्ट और दुराचारी हो गये "और यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है,

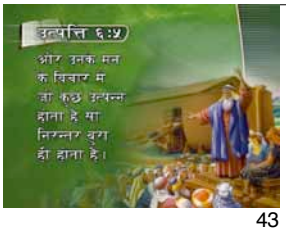

43

और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है।"

उत्पत्ति ६:५

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

44

अन्ततः परमेश्वर के लिए पृथ्वी पर जीवन सुरक्षित रखने के लिए यह आवश्यक हो गया कि दुष्टों का जल प्रलय द्वारा नाश किया जाए।

केवल आठ लोग बचे! जल प्रलय के बाद बहुत पीढ़ियाँ नहीं बीती थी कि मनुष्य पुनः नष्ट हो गए।

45

पृथ्वी पर पवित्र लोगों को बचाए रखने के लिए परमेश्वर ने कसदियों के मूर्तिपूजक और भ्रष्ट लोगों में से अब्राहम और उसके परिवार को बुलाया। उसका परिवार यदि उस शहर में रहता तो निश्चय ही वह भी दुष्ट हो जाता।

46

(मूलपाठः उत्पत्ति १२:१,२)

यहोवा ने अब्राहम से कहा, ".. अपने देश अपने घर और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा।"

47

"मैं तुझसे एक बड़ी जाति बनाऊँगा मै तुझे आशीष दूंगा और तेरा नाम बड़ा करुंगा और तू आशीष का मूल होगा।"

उत्पत्ति १२:१,२

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

48

अब्राहम अपने कसदियों के घर के सुख विलास को छोड़ने के लिए तैयार था। वह नहीं जानता था कि वह कहाँ जा रहा था किन्तु उसने उसकी एक झलक देख ली थी जो परमेश्वर ने उसके लिए रखा था।

49

(मूलपाठः इब्रानियों ११:९,१०)
"विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किये हुए देश में जैसे पराये देश में परदेसी रहा,

50

इसहाक और याकूब समेत जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे तम्बुओं में वास किया।"

51

क्योंकि वह उस स्थिर नेववाले नगर की बाट जोहता था जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है।"
इब्रानियों ११:९, १०
वह सब जो आदम और हव्वा ने खोया था, परमेश्वर ने अब्राहम और उसके परिवार को देने का वचन दिया।

52

सभी युगों के भविष्यवक्ताओं ने विश्वास किया और सब वस्तुओं की पुनः स्थापना की आशा की।
परमेश्वर की सूची में बाइबिल के कुछ विश्वास के नायकों को

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

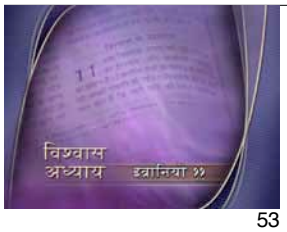

53

इब्रानियों के अध्याय ११ में अब्राहम, हनोक, नूह, हाबिल, इसहाक, रहाब, दाउद, और शमूएल इत्यादि महान विश्वासी लोगों में से कुछ नाम हैं। इन्होंने आदम और हव्वा से खोई हुई अच्छी वस्तुओं की पुनः स्थापना की परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया। ध्यान दीजिए कि इनके विषय में बाइबिल क्या कहती है:

54

(मूलपाठः इब्रानियो ११:१३, १६)
"ये सब विश्वास ही की दशा में मरे और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुए नहीं पाई पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया ---

55

पर वे एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं इसीलिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे नहीं लजाता,

56

सो उसने उनके लिए एक नगर तैयार किया है।"
इब्रानियो ११:१३,१६

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

57

यशायाह जो मुक्तिदाता सम्बन्धी भविष्यवक्ताओं में सबसे महान था, परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए पुनःस्थापना का रोमांचकारी वर्णन प्रस्तुत करता है। आइए हम उन वस्तुओं पर एक दृष्टि डालें जो परमेश्वर ने यशायाह पर प्रकट कीं।

58

(मूलपाठः यशायाह ६५:१७)
"क्योंकि देखो मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करता हूँ :

59

और पहली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएंगे।"
यशायाह ६५:१७

60

(मूलपाठः यशायाह ६०:१८)
और फिरः "तेरे देश में फिर कभी उपद्रव और तेरे सिवानों के भीतर उत्पात व अन्धेर की चर्चा न सुनाई पड़ेगी;

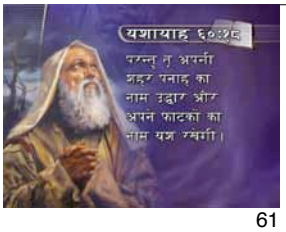

61

परन्तु तू अपनी शहर पनाह का नाम उद्धार और अपने फाटकों का नाम यश रखेगी।"
यशायाह ६०:१८

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

62

(दृश्य)

सोचिए, वहां कोई अपराध नहीं होगा। केवल शान्ति और सौहार्द! यह कितनी सुखदायी बात है कि हमारी सुरक्षा और बचाव के लिए किसी हथियार की आवश्यकता नहीं होगी। कोई बलात्कारी और चोर नहीं होंगे!

क्या उन सोने की गलियों में बिना किसी आक्रमण या लूट की चिन्ता किये हुए टहलना आश्चर्यजनक नहीं होगा? लेकिन यही सब कुछ नहीं है जो भविष्यवक्ता हमें बता सकते हैं। सुनिए।

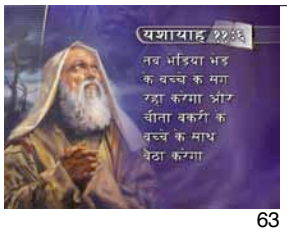

63

(मूलपाठः यशायाह ११:६)

"तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा करेगा ...

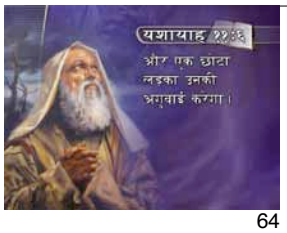

64

और एक छोटा लड़का उनकी अगुवाई करेगा।"

यशायाह ११:६

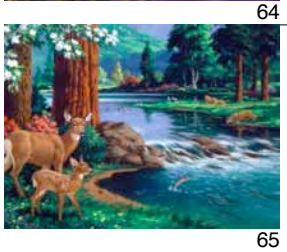
65

अब सुनिए बाइबिल पृथ्वी ग्रह के विषय में और क्या कहती है जब पृथ्वी पूर्णरुप से अपनी असली वाली सुन्दरता में स्थापित हो जाएगी:

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

66

(मूलपाठः यशायाह ३३:२४)

"कोई निवासी न कहेगा कि मैं रोगी हूं..."

यशायाह ३३:२४

कोई दिल का दौरा कोई एलर्जी नहीं, सदैव के लिए केवल पूर्णरूप से स्वस्थ!

क्या यह महान समाचार नहीं है?

67

(मूलपाठः यशायाह ३५:५)

"तब अन्धों की आखें खोली जाएंगी ..."

यशायाह ३५:५

इसमें कोई संदेह नहीं कि पहले जो अंधे थे वे पहले यीशु का चेहरा देखना चाहेंगें! ओह, कितना महान दिन होगा वह उनके लिए जो अन्धे थे!

68

(मूलपाठः यशायाह ३५:५,६)

"और बहिरों के कान खोले जाएंगे।"

यशायाह ३५:५

69

"तब लंगड़ा हरिण के तरह उछलेगा ---"

यशायाह ३५:६

कोई पहियों वाली कुर्सी नहीं! कोई बैसाखी नहीं! सबकी स्वस्थ देह होगी।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

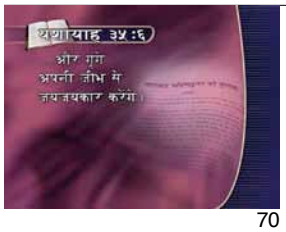

70

(मूलपाठः यशायाह ३५:६)

"...और गूंगे अपनी जीभ से जयजयकार करेंगे।"

वे केवल बोलेंगे ही नहीं किन्तु जयजयकार करेंगे!

कितना खुशी का दिन होगा वह! लेकिन इससे भी अधिक आश्चर्यजनक समाचार है!

71

(मूलपाठः यशायाह ३५:१)

"जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे मरुभूमि मगन होकर केसर की नाई फूलेगी।"

यशायाह ३५:१

नई पृथ्वी कितनी सुन्दर जगह होगी!

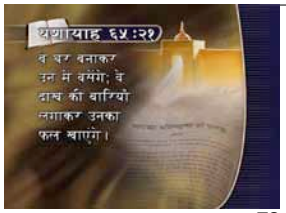

72

(मूलपाठः यशायाह ६५:२१,२२)

"वे घर बनाकर उन में बसेंगे;

वे दाख की बारियाँ लगाकर उनका फल खाएंगे।

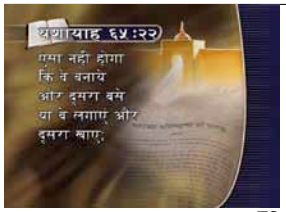

73

ऐसा नहीं होगा कि वे बनाये और दूसरा बसे या वे लगाएं और दूसरा खाए;

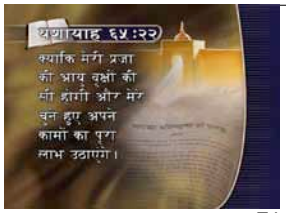

74

क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी और मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएंगे।"

यशायाह ६५:२१,२२

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

75

निश्चय ही ऐसा लगता है कि स्वर्ग वास्तविक लोगों के साथ वास्तविक स्थान होगा जो वास्तविक काम करेंगे, है कि नहीं?

वास्तव में हमारे सबके अपने नाम होंगे और लोग हमें जानते होंगे!

76

(मूलपाठः यशायाह ६५:२२,२३)

"क्योंकि जिस प्रकार नया आकाश और नयी पृथ्वी जो मैं बनाने पर हूँ मेरे सम्मुख बनी रहेगी, यहोवा की यही वाणी है,

77

उसी प्रकार तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम भी बना रहेगा यहोवा की यही वाणी है।"

यशायाह ६६:२२

78

"फिर ऐसा होगा कि एक नये चांद से दूसरे चांद के दिन तक और एक विश्राम दिन से दूसरे विश्राम दिन तक,

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

79

समस्त प्राणी तेरे सामने दण्ड़वत करने को आया करेंगे। यहोवा की यही वाणी है।"

यशायाह ६६:२३

नयी पृथ्वी परमेश्वर और उसकी प्रजा के लिए एक प्रसन्नता और आनन्द का स्थान होगी।

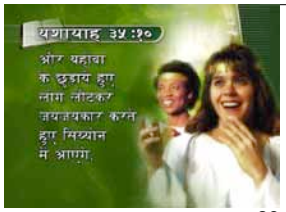

80

(मूलपाठः यशायाह ३५:१०)

"और यहोवा के छुड़ाये हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन में आएंगे,

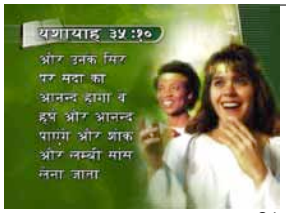

81

और उनके सिर पर सदा का आनन्द होगा वे हर्ष और आनन्द पाएंगे और शोक और लम्बी सांस लेना जाता रहेगा।"

यशायाह ३५ : १०

क्या यह उत्तेजक नहीं लगता?

82

यह अद्भुत आनन्दमय उत्सव होगा जब उद्धार पाए हुए प्रत्येक सब्त को पवित्र नगर में जयजयकार करने गाने और संगति के लिए आएंगे।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

83

यीशु ने कहा वे हममें से प्रत्येक के लिए भवन बनवा रहे है। हम उसका आनन्द तो लेंगे ही, किन्तु यशायाह कहता है कि हम भी घर बनायेंगे! ऐसा लगता है कि शायद हमारा एक घर शहर से बाहर होगा जिसे हम स्वयं बनायेंगे। पर प्रत्येक सप्ताहान्त हम नयी पृथ्वी के मुख्य नगर में जायेंगे और नगर में बने अपने घर का प्रयोग करेंगे।

84

(दृश्य)

बाइबिल में स्वर्ग की तस्वीर साफ है परमेश्वर नया स्वर्ग और नयी पृथ्वी बनायेगा। पवित्र नगर नया यरुशलेम परमेश्वर के पास से स्वर्ग से नीचे उतरेगा। पृथ्वी विद्रोह ग्रह पाप पतित नये विश्व की राजधानी बन जाएगी।

आपको आश्चर्य हो सकता है किन्तु यह पृथ्वी उद्धार पाये हुओं का आनेवाला घर बनना है। यीशु ने ऐसा ही कहा था।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

85

(मूलपाठः मत्ती ५:५)

"धन्य है वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।"

मत्ती ५:५

परमेश्वर इस पृथ्वी ग्रह को पुनः सिद्धता की अवस्था में लायेगा और वह क्या ही महिमामय नई पृथ्वी होगी।

86

संभवतः आपको यीशु की अदभुत प्रतिज्ञाओं में से कुछ याद होंगी जो उन्होंने स्वर्ग वापस लौटने से पूर्व अपने चेलों और अपने सभी युगों के मानने वालों को दिया :

87

(मूलपाठः यूहन्ना १४:१-३)

"तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।

88

मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं यदि न होते तो मै तुम से कह देता ...

89

और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा;

90

कि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी रहो।"

यूहन्ना १४:१-३

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

91

(मूलपाठः मत्ती ६:१०)

नमूने की प्रार्थना जो यीशु ने अपने चेलों को सिखाई कहती है, "तेरा राज्य आए तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे पृथ्वी पर भी पूरी हो।"

मत्ती ६:१०

यहाँ हम देखते हैं कि यीशु हमसे सब वस्तुओं की पुनःस्थापना के लिए प्रार्थना करने के लिए कहते हैं।

92

अब आइए उस शोभायमान नगर के विषय में और विस्तार से देखें जो यूहन्ना ने पतमुस टापू पर दर्शन में देखा। ऐसा लगता है जैसे भविष्यवक्ता उस पवित्र नगर की महिमा व्यक्त करने के लिए शब्द खोजने में कठिनाई अनुभव कर रहा था। बाइबिल कहती है कि:

93

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों २:९)

"...जो आंख ने नहीं देखा और कान ने नहीं सुना और जो बातें मनुष्य के मन में नहीं आ सकती,

94

वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए तैयार की है।"

१. कुरिन्थियों २:९

एक मिनट रुकिए। अधिकतर लोग अगले पद को नहीं पढ़ते जो कहता है,

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

95

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों २:१०)
"परन्तु परमेश्वर ने उन को अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट किया..."

96

आपने देखा कि परमेश्वर ने इन बातों को पवित्र आत्मा के द्वारा भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया और उन्होंने हमारे लिए लिखा। कोई संदेह नहीं कि उसमें से आधा भी नहीं बताया गया है!

97

मित्रों, यूहन्ना, यशायाह और सारे भविष्यवक्ताओं के साथ ऐसा ही रहा। यह पूर्णतया सत्य है कि इन बातों का आधा भी नहीं बताया गया! जब यूहन्ना पवित्र नगर का विवरण खोलता है तो कल्पना सा लगता है। किन्तु यह परमेश्वर का वचन है! जैसा यूहन्ना ने देखा वैसा ही वर्णन किया।

98

(दृश्य)
यूहन्ना कहता है कि उसने नये स्वर्ग और नयी पृथ्वी को देखा और समुद्र भी न रहा। तब उसने पवित्र नगर नये यरुशलेम को स्वर्ग से उतरते देखा।
उसके बाद नगर के विषय में सब कुछ हमें बताता है।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

99

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २१:१-३,११,१७,२१)

"अब मैंने एक नये आकाश और एक नयी पृथ्वी को देखा क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी। और समुद्र भी न रहा।"

प्रकाशितवाक्य २१:१

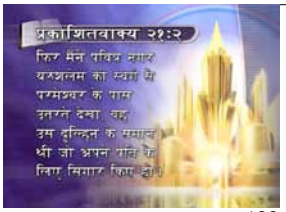

100

"फिर मैंने पवित्र नगर यरुशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास उतरते देखा, वह उस दुल्हिन के समान थी जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो।"

प्रकाशितवाक्य २१ : २

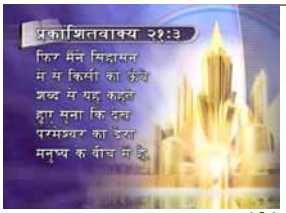

101

"फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना कि देख परमेश्वर का डेरा मनुष्य के बीच में है,

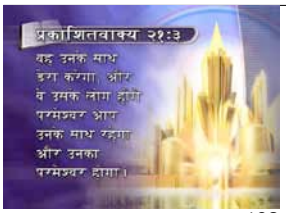

102

वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा।"

प्रकाशितवाक्य २१:३

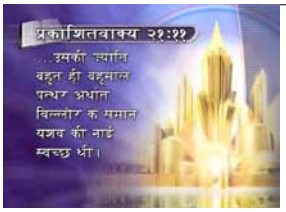

103

"...उसकी ज्योति बहुत ही बहुमोल पत्थर अर्थात बिल्लौर के समान यशब की नाई स्वच्छ थी।"

प्रकाशितवाक्य २१:११

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

104

"और उसने उसकी शहर पनाह को नापा तो एक सौ चौआलीस हाथ निकली..."

(पद १७)

105

"और बारहों फाटक बारह मोतियों के बने थे..."

इस प्रकार वहाँ के फाटक मोतियों के हैं!

(पद २१)

106

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २१:१२,२१, २३)

"...उसकी शहरपनाह बडी ऊँची थी... और उन पर इस्राएलियों के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे।"

(पद १२)

107

"...और नगर की सड़क स्वच्छ कांच के समान चोखे सोने की थी।" (पद २१)

108

"और उस नगर में सूर्य और चाँद के उजाले का प्रयोजन नहीं था क्योंकि परमेश्वर के तेज से उसमें उजाला हो रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है।"

(पद २३)

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

109

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २२:१,२, ५)

"... बिल्लौर की सी झलकती हुई जीवन के जल की नदी दिखाई जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर।"

110

"...नदी के इस पार और उस पार जीवन का पेड़ था उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे और वह हर महीने फलता था ..."

111

"और फिर रात न होगी..."

प्रकाशितवाक्य २२:५

परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस मुख्य नगर नये यरुशलेम में होगा।

112

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २२:३)

"और फिर श्राप न होगा लेकिन परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा ..."

प्रकाशितवाक्य २२:३

और सबसे अधिक अद्भुत उपहार प्रकाशितवाक्य २१:४ में पाया जाता है:

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

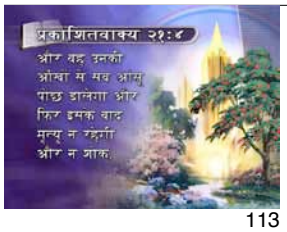

113

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २१:४)

"और वह उनकी आँखों से सब आंसू पोंछ डालेगा और फिर इसके बाद मृत्यु न रहेगी और न शोक,

114

न विलाप न पीड़ा रहेगी, पहली बातें जाती रहीं।"

प्रकाशितवाक्य २१:४

शायद आप सोच रहे होंगे कि पवित्र नगर कितना बड़ा होगा।

115

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २१:१६)

यूहन्ना नगर के आकार के बारे में ठीक ठीक विवरण देता है

"और वह नगर चौकोर बसा हुआ था और उसकी लम्बाई चौड़ाई के बराबर थी।

116

उसने उस गज से नगर को नापा तो साढ़े सात सौ कोस निकला।"

प्रकाशितवाक्य २१:१६

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

117

(एक कोस अंग्रेजी मील का आठवां भाग होता है इस प्रकार १२,००० कोस लगभग २४०० किलोमीटर होगा)। प्राचीनकाल में नगरों की नाप उनकी शहरपनाह की दूरी से की जाती थी। इस प्रकार नगर की प्रत्येक साइड लगभग ६०० किमी. या ३७५ मील के लगभग होगी। शायद आप यह सोच रहे होंगे कि क्या यह नगर सभी उद्धार पाए हुओं के लिए काफी हो पाएगा।

118

टोकियो शहर में लगभग ३५० लाख लोग रहते हैं।

119

ग्रेटर न्यूयार्क शहर में २०० लाख से अधिक लोग रहते हैं।

120

सीयोल और मैक्सिको शहर में अलग अलग २०० लाख लोग रहते हैं।

121

एक गणितज्ञ ने हिसाब लगाया कि नये यरूशलेम में बीस खरब लोग रह सकते हैं! दूसरे शब्दों में, वहाँ उन सब लोगों के लिए स्थान होगा जो भी वहाँ होना चाहता है।

किन्तु इतने अद्भुत स्थान में हम क्या करने में व्यस्त होंगे?

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

122

(दृश्य)

ना कोई अपराध, ना कोई बीमारी, ना कोई भूख, ना कोई प्यास, या रोग नहीं वहाँ केवल शान्ति और सौहार्द हमेशा रहेगा!

ऐसा लगता है कि हम बहुत से काम करेंगे: गाँव में हम अपने सपनों का घर बनाएंगे और अपने बाग लगायेंगे।

123

सृष्टि के रहस्यों को खोलने के लिए सृष्टिकर्त्ता यीशु वहाँ होगा।

हम सदैव नयी बातें सीखेंगे।

हम जब चाहें यात्रा कर सकेंगे।

124

अपने मित्रों और प्रियों के साथ समय बिता सकेंगे।और प्रत्येक सब्त हमारे प्रभु के साथ संगीत के विशेष समय में हम स्वर्गदूतों और यीशु के साथ परमेश्वर की महिमा में जयजयकार करेंगे। आप पूछ सकते हैं हम कैसे निश्चित हो सकते है कि हम वहाँ हो सकते हैं ? उत्तर साधारण है। क्योंकि बाइबिल -हमारी मुख्य चाबी कहती है :

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

125

(मूलपाठः गलतियों ३:२९)

"और यदि तुम मसीह के हो तो इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।"

गलतियों ३:२९

126

दूसरे शब्दों में, यदि आप यीशु को उद्धारकर्त्ता स्वीकार करें तो परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा अब्राहम को दी वह आपके लिए भी होगी।

जब हम बाइबिल का अध्ययन करते हैं तो यह जानना रुचिकर लगता है कि

127

प्रथम तीन अध्याय बताते हैं कि परमेश्वर ने किस प्रकार संसार को बनाया और आदम और हव्वा के लिए स्वर्गीय घर बनाया। परन्तु आदम और हव्वा ने उसे खो दिया।

128

बाइबिल के अन्तिम तीन अध्याय हमें आदम और हव्वा ने जो कुछ खोया उसे पुनः स्थापित करने की परमेश्वर की योजना का पूर्वालोकन करवाते हैं। एक आनेवाला सुन्दर समय जहाँ हमारे प्रिय सपने साकार होंगे।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

129

कई वर्ष पूर्व एक नाव जो भेड़ों को ले जा रही थी कोहरे के कारण उत्तरी समुद्र में रास्ता भूल गई। नाव तीन दिन तक निरुद्देश्य भटकती रही। भेड़ें जो नाव पर थीं उन्होंने बासी घास खाना छोड़ दिया।

उन्होंने नाव के एक किनारे पर मिमयाना आरम्भ कर दिया। वे लगातार मिमयाती रहीं। कप्तान और नाव के कर्मचारी अत्यधिक अचम्भित थे। वे सोच रहे थे कि वे कैसे भटक गये। शीघ्र ही कोहरा हट गया। नाव स्कॉटिश किनारे से कुछ ही गज दूर थी। भेड़ों ने ताजी कटी हुई घास को सूंघ लिया था जो स्कॉटिश मैदान में पड़ी थी। उन्होंने कई दिन पुरानी घास जिसे उनके मालिक खिलाने की कोशिश कर रहे थे, खाने से इन्कार कर दिया।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

130

(दृश्य)

जब हमें स्वर्ग की सुगन्ध मिल जाती है, हम अपनी प्राथमिकताएँ व्यवस्थित करते हैं। जब हमें अनन्त जीवन की सुगन्ध मिल जाती है तो शेष सब कुछ के लिए स्वतः स्थान बन जाता है हमें दूसरी धरती की चाह हो जाती है। हम अनन्त के किनारे पर पहुँचना चाहते हैं। क्या आप स्वर्ग के लिए ललायित हैं? क्या आप वहाँ होना चाहते हैं? क्या आप के हृदय की इच्छा मसीह के साथ सदैव महिमा में रहने की है? क्या आप कहना चाहेंगे, "हाँ प्रभु, मैं तेरे साथ होना चाहता हूँ। मेरी इच्छा है कि तेरे साथ हमेशा हमेशा तक रहूँ?"

131

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २२:१७)

परमेश्वर आपको निमंत्रण देता हैः "आत्मा और दुल्हिन कहती है, ' आओ' ।"

प्रकाशितवाक्य २२:१७

132

इसे टालिए नहीं!

आप परमेश्वर के आश्चर्यजनक कल के एक हिस्सा बन सकते हैं।

उसे अपने हृदय में आमन्त्रित करें और स्वर्ग आपका घर बन जायेगा!